विमर्श खंड

दक्षिण भारत में हिंदी का विकास और अनुवाद

-डॉ. प्रियंका कुमारी

अनुवाद एक महत्वपूर्ण कार्य है जो एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखित या मौखिक कार्य (जैसे कि ग्रंथ, कविता, कहानी, नाटक, लेख, आदि) को प्रकाशित करता है। यह कार्य भाषाओं, संस्कृतियों, और समाजों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है और साहित्यिक विविधता को प्रदर्शित करता है। अनुवादक के लिए कुशलता, संभावनाशीलता, और साहित्यिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। इसलिए अनुवादक को मूल लेखन के भावनात्मक और साहित्यिक पहलू को समझने और प्रतिस्थापित करने की क्षमता होनी चाहिए। अनुवादक को उन दोनों भाषाओं की अच्छी जानकारी होनी चाहिए जिनमें उन्हें काम करना है। कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार, "अनुवाद आज अपने सैद्धांतिक संदर्भ में बहुआयामी और प्रयोजन में बहुमुखी हो गया है, किंतु अनुवाद की सार्थकता और व्यावहारिकता में जो संवर्धन हुआ, उसी अनुपात में उसके सिद्धांतों पर गहराई से चिंतन नहीं हुआ। वास्तव में अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, प्रकृति तथा उसके विवेचन में अनुवादशास्त्री इतने उलझ गए हैं कि वे अनुवाद के दर्शन को पूरी तरह समझ नहीं पाए, क्योंकि अनुवाद में इन सैद्धांतिक संदर्भों के अतिरिक्त व्यवहार के रूप में उसे साधना कोई सरल कार्य नहीं है। सफल अनुवाद का संबंध व्यवहार पक्ष से है और इसीलिए अनुवाद के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष के संबंधों पर सार्थक विवेचन करने की आवश्यकता है ताकि अनुवाद प्रक्रिया स्पष्ट हो सके।"[1] अनुवादक को मूल लेखन के अनुसार विशेषण, वाक्य-रचना, और भाषा का समझ होना चाहिए, साथ ही सांविधानिक नियमों का पालन करते हुए अनुवाद करना चाहिए। अनुवादक को अपने काम को बार-बार समीक्षा करना और सुधारने की क्षमता होनी चाहिए ताकि अनुवाद में कोई

त्रुटि न रहे। अनुवादक का काम है मूल लेखक के भाषाई और साहित्यिक शैली को संजीवनीकृत करना और आदर्श रूप से सांविधानिक रूप से उनके पाठकों को संवाद में प्रस्तुत करना। इस रूप में, अनुवादक का कार्य साहित्यिक धरोहर को संरक्षित करता है, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है, और विश्व साहित्य की अधिक व्यापक पहुंच को समर्थन करता है।

दक्षिणी हिंदी, उत्तर भारतीय हिंदी के विपरीत है और दक्षिण भारतीय उपमहाद्वीप के क्षेत्र में बोली जाती है। इसका उपयोग आमतौर पर आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, और केरल के कुछ क्षेत्रों में किया जाता है। दक्षिणी हिंदी का विकास उस समय से शुरू हुआ जब उर्दू और तेलुगु भाषा के विभिन्न संस्करणों का मिलन हुआ और उन्हें मिश्रण किया गया। इसका प्रभाव भाषाई, सांस्कृतिक, और सामाजिक परिवेश पर पड़ा, और दक्षिणी हिंदी अपने स्थान स्थापित कर पाई। दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके सांस्कृतिक और भाषाई विकास के साथ जुड़ा हुआ है। इसने विभिन्न भाषाओं, विचारधाराओं, और साहित्यिक परंपराओं को जोड़ा है, जिसने इसे एक अद्वितीय भाषाई पहचान प्रदान की है। इस रूप में, दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके विविध सांस्कृतिक विकास को दर्शाता है, जो इसे भारतीय भाषाओं की विविधता का अभिन्न अंग बनाता है।

दक्षिणी हिंदी, जिसे दक्खनी भाषा या दक्खनी हिंदी भी कहा जाता है। यह भाषा भारत के दक्षिणी भागों में बोली जाती है, जैसे कि महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, और तमिलनाडु। दक्षिणी हिंदी का इतिहास उसके भाषाई और सांस्कृतिक परिपेक्ष में समृद्ध और रोमांचक है। यह भाषा मुग़ल साम्राज्य के समय से ही विकसित हुई थी और मुग़ल शासनकाल के दौरान उर्दू के साथ गहरा संबंध बनाया। दक्षिणी हिंदी के विकास में मुग़ल साम्राज्य, आदिवासी संस्कृतियों, हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों, और दक्षिण भारतीय भाषाओं का संगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दक्षिणी हिंदी के अनुवाद का प्रयोग भारत की अनेक भाषाओं में होता है। इसका उदाहरण, मराठी से हिंदी, हिंदी से तेलुगु, या उर्दू से कन्नड़ आदि में अनुवाद हो सकता है। एन ई विश्वनाथ अय्यर के अनुसार, "हिंदी को स्वाधीनता प्रेम का प्रतीक माना गया था। लोग हिंदी सीखना देशप्रेम का ही एक रूप स्वीकार करते थे। विदेशी भाषा और विदेशी सत्ता से अपने को छुड़ाने की नई चेतना हिंदी प्रचार के दिनों में मुखरित थी। यही कारण है कि बँगला, मराठी, गुजराती आदि अन्य भाषाओं की कृतियाँ धड़ाधड़ हिंदी में अनूदित होती थीं तथा हिंदी से अन्य भाषाओं में रूपांतरित की गईं।"[2] अनुवाद का उद्देश्य एक भाषा से दूसरी भाषा में संदेश का ध्यानाकर्षण और समझाना होता है। इसका प्रयोग साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और अन्य क्षेत्रों में होता है। दक्षिणी हिंदी के अनुवाद का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे कि साहित्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, सरकारी दस्तावेज़, और औद्योगिक क्षेत्र में। यहाँ कुछ उदाहरण हैं जिनमें दक्षिणी हिंदी का अनुवाद किया जा सकता है| 'इस गद्य- ग्रंथ का नाम 'मिराजुल आशिकीन' है, जिसके लेखक ख्वाजा बन्दानवाज़ (1318- 1430) हैं। दक्खिनी के साहित्यकारों में अब्दुल्ला, वजही, निजामी, गवासी, ग़ुलामअली तथा बेलूरी आदि प्रमुख हैं। उर्दू साहित्य का आरम्भ भी वस्तुत: दक्खिनी से ही हुआ है।' इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्र में कार्य हो रहें हैं। साहित्यिक काम जैसे कविताएं, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, और अन्य साहित्यिक रचनाएं दक्षिणी हिंदी में अनुवादित की जा रही हैं। इसके जरिए विभिन्न भाषाओं में लिखी गई रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अनुवाद की जरूरत होती है। विशेषज्ञ लेखों, अनुसंधान रिपोर्टों, पत्रिकाओं, और अन्य तकनीकी सामग्री का अनुवाद दक्षिणी हिंदी में किया जा सकता है। व्यापारिक कार्यों, निवेश, बैंकिंग, और अन्य वित्तीय संबंधों के क्षेत्र में भी दक्षिणी हिंदी का अनुवाद किया जाता है। यह संदेश, प्रस्तावनाएं, और अन्य

व्यापारिक दस्तावेजों को समझने और उपयोग करने में मदद करता है। सरकारी कार्यालयों, निगम, और अन्य संगठनों के दस्तावेज़ों का अनुवाद भी दक्षिणी हिंदी में किया जा सकता है। यह सरकारी नीतियों, कानून, और अन्य अधिकारिक दस्तावेजों को सामान्य जनता के लिए समझने में मदद करता है। इन्हीं क्षेत्रों में दक्षिणी हिंदी का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जाता है, ताकि भाषाओं के बीच संचार और समझ में सुधार हो सके।

दक्षिणी हिंदी में कई साहित्यिक रचनाएं अनुवादित की जाती हैं, जो कि इस क्षेत्र की संवृद्धि और भाषाई धरोहर को संरक्षित करती हैं। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ, उपन्यास और लेखन, रबीन्द्रनाथ टैगोर की कविताएं और नाटक, निराला, सुरेन्द्रनाथ नाथ, और भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविताएं और उपन्यास, गुलजार की कविताएं और गीत आदि। मुंशी प्रेमचंद की कई कहानियाँ और उपन्यास दक्षिणी हिंदी में अनुवादित होते हैं, जैसे कि 'गोदान' और 'गबन'। साहित्यिक उपन्यासों का अनुवाद, जैसे कि 'नागमंडल', 'राग दरबारी' और 'श्रीरामा भारती' विभिन्न भाषाओं के उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद भी किया जाता है। कविताओं का अनुवाद, जैसे कि 'गीतांजलि' और 'गीता-जयंती', साहित्यिक काव्य संग्रह, जैसे कि 'संचयन'। अनेक कवियों की कविताएँ भी दक्षिणी हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। रवींद्रनाथ टैगोर, निराला, सुरेन्द्रनाथ नाथ, और गुलजार जैसे कवियों की कविताएं। विभिन्न भाषाओं के प्रमुख नाटकों का अनुवाद भी किया जाता है, जैसे कि शेक्सपियर के नाटक और भारतीय नाटक। जैसे साहित्यिक नाटक, 'अंतिम पाँच साल' और 'अभिनव रस्सी की जंजीरें' आदि।

विभिन्न भाषाओं में लेखित पुस्तकों का अनुवाद भी किया जाता है, जैसे कि धार्मिक ग्रंथ और विज्ञान संबंधित पुस्तकें। इस रूप में, दक्षिणी हिंदी के अनुवाद साहित्यिक विरासत को संरक्षित करते हैं और विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच

साहित्यिक अद्यतन और विश्वसनीयता को प्रोत्साहित करते हैं। विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच साहित्यिक विनिमय को भी प्रोत्साहित करते हैं। "दक्षिण भारत की प्राचीनतम तथा समृद्ध भाषा तमिल में भी अनुवाद की सशक्त एवं सुदीर्घ परंपरा उपलब्ध रही है। जैन कथाओं, बौद्ध कथाओं, महाभारत और रामकथा संबंधी जो साहित्य तमिल में रचित हुआ उसकी प्रेरणा अनुवाद ही रही। भारत की समस्त आधुनिक भाषाओं में जिन महत्त्वपूर्ण रचनाओं के सर्वाधिक अनुवाद हुए उनमें गीता, रामायण, भागवत पुराण, महाभारत तथा संस्कृत के विश्वप्रसिद्ध कवि कालिदास का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार सूफी साहित्य, फारसी की प्रेम कथाओं में लैला-मजनूं, गुलिस्तान-बोसतां, शाहनामा, सोहराब-रुस्तम आदि का भी अनेक भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय अनुवाद हुआ।"[3]

तेलगु, कन्नड़, और तमिल आदि दक्षिण भाषा में लिखने वाले कुछ प्रमुख रचनाकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद और उनके साहित्यिक योगदान बहुत हीं महत्वपूर्ण है, जिससे उनकी साहित्यिक धरोहर को बड़े पैमाने पर लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। इसमें कविताएं, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, और अन्य लेखनात्मक कार्य शामिल हो सकते हैं। "दक्षिण भारत की संस्कृति और सभ्यता को, वहाँ के मूल्यों और विचारों को इसी सशक्त अनुवाद परंपरा ने विस्तार दिया। डॉ. इलापावलुरि पांडुरंग राव ने जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित अंमर कृति 'कामायनी' का 1974 में तेलुगु में अनुवाद किया। पांडुरंग राव द्वारा अनूदित 'कामायनी' महाकाव्य का तेलुगु पद्यानुवाद अनेक विशेषताओं से संपन्न है। पांडुरंग राव के अलावा तेलुगु में 'कामायनी' के अनुवादकों में दो अन्य अनुवादक श्री वाविलात सामयाजुल और जंध्याल पापच्य शास्त्री के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन्होंने 'कामायनी' के अतिरिक्त जयशंकर प्रसाद कृत 'आँसू' का भी अनुवाद किया है। संस्कृत के नीलकंठ दीक्षित के 'कलिविडबंनमु' का पंथानुवाद तथा जयदेव कृत 'पीयूष लहरी' के गेय रूपक में लयबद्ध अनुवाद भी किए गए।"[4]

तेलगु संत त्यागराजु की भक्ति भावनाओं से ओतप्रोत कविताएं हिंदी में अनुवादित की जाती हैं, जो भारतीय संगीत और साहित्य के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। तेलगु कथाकार और पत्रकार जशुआ रेड्डी की कहानियाँ हिंदी में अनुवादित की जाती हैं, जो उनके सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं। तेलगु उपन्यासकार श्रीधर वेंकटसुब्रमण्यं की उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया जाता है, जो सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक मुद्दों पर आधारित होते हैं। तेलगु कवि और नाटककार काशी नाथ तिरुपति के कई लेखनात्मक कार्य हिंदी में अनुवादित किए जाते हैं, जो भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करते हैं। तेलगु के प्रमुख कवियों में वेमुलावाडा किशोर कृष्णा, स्रीशैलपति नारसिंहराव, और सुमित्रानंदन पंतुलु शामिल हैं, जिनकी कविताएं हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। तेलगु के उपन्यासकार आर्थुर हैली, रवींद्रनाथ तागोर, और अनुशा रेड्डी की कहानियाँ हिंदी में उपलब्ध हैं। कन्नड़ के प्रमुख कवियों में कुवेंपुडु तेम्पान्ना, कुवेंपुडु रंगनाथ, और जयंत का कविताओं का हिंदी में अनुवाद होता है। कन्नड़ भाषा में लिखी गई अशोक मित्र, राजकुमार, और उदय शंकर के उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। तमिल के अग्रणी कवियों में सुब्रमण्य भारती, भरतीयार, और बारथियार शामिल हैं, जिनकी कविताएं हिंदी में अनुवादित होती हैं। तमिल भाषा में लिखी गई जे.आर. राममूर्ती, सुधा मुर्ति, और सुब्रमण्य भारती की कहानियाँ हिंदी में अनुवादित की जाती हैं। "हिन्दी से तेलुगु और तेलुगु से हिन्दी भाषा में अनुवाद-प्रक्रिया नई नहीं है। संस्कृत के रामायण, महाभारत, गीता तथा अनेकानेक पुराणों को आधार बनाकर दक्षिण भारतीय भाषाओं में काफी संख्या में काव्य ग्रंथ लिखे गए। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिष्टफ कृष्णमूर्ति शास्त्री एंड मंड नरहरि काय्या ने 'रामचरितमानस' का तेलुगु पद्यानुवाद किया। तेलुगु में अब 'मानस' के दर्जन भर अनुवाद उपलब्ध हैं। इस प्रकार तेलुगु से हिन्दी में भी अनुवाद की एक मजबूत श्रृंखला बनती जा रही है।"[5]

इन रचनाकारों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद साहित्यिक विवेक, साहित्यिक परंपरा, और सामाजिक चेतना को विस्तार से समझने में मदद करता है। इनकी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद साहित्य को विश्वसनीयता, विस्तार, और साहित्यिक धरोहर की अधिक जानकारी तक पहुंचाता है।

दक्षिणी साहित्य का हिंदी में अनुवाद करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जो विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई धरोहरों को बाँटने और समझाने में मदद करता है। इससे लोगों को दक्षिणी भारतीय साहित्य, विचारधारा, और संस्कृति की समृद्धता का अनुभव होता है। यहां कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिन्हें हिंदी में अनुवादित किया जा सकता है। दक्षिणी भाषाओं की वाणी के विशेषताओं का अनुवाद हिंदी में किया जा सकता है। इसमें तेलुगु, कन्नड़, तमिल, और मलयालम के उत्कृष्ट साहित्य को शामिल किया जा सकता है। दक्षिणी साहित्य में उत्कृष्ट नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया जा सकता है। इसमें भारतीय क्लासिकल नाटक और सामकालीन नाटकों का समावेश किया जा सकता है। दक्षिणी साहित्य की उत्कृष्ट कविताएं हिंदी में अनुवादित की जा सकती हैं, जिससे उनका अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच मिल सके। दक्षिणी साहित्य की कहानियाँ और उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद लोगों को इनकी साहित्यिक धरोहर से परिचित कराता है। विभिन्न धार्मिक, ऐतिहासिक, और विज्ञान संबंधित ग्रंथों का अनुवाद हिंदी में किया जा सकता है। इस रूप में, दक्षिणी साहित्य का हिंदी में अनुवाद उसके महत्वपूर्ण साहित्यिक धन को विश्वसनीय रूप से प्रस्तुत करता है और भारतीय साहित्य की अधिक विस्तृत ज्ञान को लोगों तक पहुंचाता है।

संदर्भ:

१. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 15

२. एन ई विश्वनाथ अय्यर - व्यवहारिक अनुवाद, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, पृ. सं. 254

३. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 470

४. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 466

५. कृष्ण कुमार गोस्वामी - अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 466

डॉ. प्रियंका कुमारी

सहायक शिक्षक,हिंदी विभाग

सेंट फ्रांसिस महाविद्यालय, बेंगलुरु

संपर्क :- priyanilpawan@gmail.com